त्रिमासिक कृषि पत्रिका

जवाहर कृषि संदेश

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय

कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ (म.प्र.)

वर्ष-6 अंक- 21 जुलाई से सितम्बर 2013

संरक्षक
डॉ. व्ही.एस. तोमर
कुलपति, ज.ने.कृ.वि.वि. जबलपुर

मार्गदर्शक
डॉ.पी.के. मिश्रा
संचालक विस्तार सेवायें
ज.ने.कृ.वि.वि. जबलपुर

डॉ. आर.के. पाठक
अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय
टीकमगढ़

डॉ. अनुपम मिश्रा
आंचलिक परियोजना संचालक,
आंचलिक ईकाई-VII
भा.कृ.अ.परि., जबलपुर

मुख्य सम्पादक
डॉ. शैलेन्द्र सिंह गौतम
प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक
विशेषज्ञ (उद्यानिकी)

सम्पादक मण्डल
डॉ. आर.के. प्रजापति
विशेषज्ञ (पौध संरक्षण)
श्री बी.एल. साहू
विशेषज्ञ (गृह विज्ञान)
डॉ. संदीप कुमार खरे
विशेषज्ञ (पशुपालन)
डॉ. आर.के. द्विवेदी
कार्यक्रम सहायक (सस्य विज्ञान)

प्रकाशक :
कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ (म.प्र.)
सम्पर्क-
फोन : 07683-244934 (ऑ.)
फैक्स : 07683-245034
ई-मेल : kvktikamgarh@rediffmail.com

॥ संदेश ॥

कृषि में मध्य प्रदेश की उत्पादकता के 18 प्रतिशत वृद्धि को मापदण्ड स्थापित करने एवं आगे बढ़ाने के लिये कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ के द्वारा खरीफ-2013 में किये गये सराहनीय प्रयास में ये एक ओर जवाहर कृषि संदेश जुलाई-सितम्बर 2013 के माध्यम से कृषि की उन्नत तकनीकों को कृषकों तक पहुँचाया जा रहा है ।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इन तकनीकों को अपनाकर कृषि उपज में वृद्धि कर सकेगें । मैं कृषि विज्ञान केन्द्र के समस्त वैज्ञानिकों की सराहना करते हुये उन्हें धन्यवाद देता हूँ !

डॉ. आर.के. पाठक
अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय, टीकमगढ़

17वीं वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति की बैठक सम्पन्न

कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ (म.प्र.) की 17वीं वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति की बैठक 17 जुलाई- 2013 को केन्द्र के सभागार में सम्पन्न हुई ।

17वीं बैठक की अध्यक्षता एवं शुभारंभ डॉ. एन.के. सेठ, संयुक्त संचालक विस्तार सेवायें, ज.ने.कृ.वि.वि., जबलपुर एवं डॉ. आर.के. पाठक, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, टीकमगढ़ के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुई ।

प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक, डॉ. एस.एस. गौतम द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र की उपलब्धियों के साथ-साथ खरीफ 2013 में केन्द्र द्वारा प्रस्तावित कार्यक्रम एवं अन्य कृषि प्रसार, प्रक्षेत्र प्रदर्शन का प्रस्तुतीकरण किया गया । श्री बी.एल. साहू, विशेषज्ञ (गृह विज्ञान) द्वारा विगत पिछले वर्ष रबी में किये गये कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण किया।

कार्यक्रम का संचालन, डॉ. संदीप कुमार खरे, विशेषज्ञ (पशुपालन) तथा सभी माननीय् सदस्यों का आभार प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक डॉ. एस.एस. गौतम ने माना ।

बैठक में प्रभारी आत्मा परियोजना, लीड बैंक, सहायक-संचालक उद्यानिकी, कृषि अभियांत्रिकी, पशुपालन, गैर सरकारी संगठन सहित सदस्यों ने भाग लिया । मुख्य अतिथि डॉ. आर.के. पाठक ने अपने वैज्ञानिकों को विशेष उपलब्धियों के लिये बधाई दी तथा केन्द्र के नेतृत्व की सराहना की ।

अरबी की खेती-

अरबी की खेती उचित जल निकास वाली सभी प्रकार की भूमि एवं सामान्य जलवायु में की जा सकती है । यदि सिंचाई की सुविधा है तो इसकी खेती वर्ष भर की जा सकती है । बलुई लोम मृदा में गड्डे बनाकर, दोमट मृदा में उभरी हुई मेढ़ बनाकर, सिंचाई उपलब्ध होने पर मेड़ नाली विधि से अरबी की बुबाई की जा सकती है । कन्दों को 60X45 सेमी. की दूरी पर रोपण करना चाहिये । लगभग 37000 कन्दों (या 800 किग्रा.) की प्रति हैक्टेयर आवश्यकता होती है कन्दों को 2.5–7.5 सेमी. गहराई तक बोना चाहिये । प्रत्येक कन्द का वजन लगभग 20–25 ग्राम होना चाहिये। गोबर की सड़ी खाद या कम्पोस्ट 12 टन/हैक्ट. अन्तिम जुताई के समय खेत में मिला देना चाहिये । नत्रजन 80 किग्रा. फास्फोरस 25 किग्रा. और पोटाश 100 किग्रा. प्रति हैक्टेयर उर्वरक की आवश्यकता पड़ती है । खेत में 5–10 प्रतिशत अंकुरण नहीं होता है । जिसके लिये 2000–3000 कन्दों को नर्सरी में पहले से सघन रूप में उगा लेते हैं ताकि प्रति हैक्टेयर अंकुरण असफल होने पर अंकुरित कन्दो को तुरन्त लगाया जा सके । कन्दों को अंकुरण में 30–45 दिन का समय लगता है । इसलिये 10–15 टन सूखी या हरी पत्तियों से बुबाई के बाद खेत को ढक देते हैं । अरबी एवं लोबिया की बोनी अगेती किस्म का अन्तराशास्यन (1:1) करनी चाहिए । 60 दिन बाद हरी फली तुड़ाई करके लोबिया उखाड़कर पशुओं को चारे के रूप में खिला सकते हैं । फसल को 3–4 महीनों तक खरपतवार रहित रखना चाहिए । अच्छी बढ़वार के लिये दो बार मिट्टी चढ़ाना चाहिए । पहली गुड़ाई 30–40 दिन । दूसरी गुड़ाई बुबाई के 60–70 दिन के बाद करना चाहिए ।

रोग प्रबंधन- पर्णदाग (पछेती झुलसा) के प्रबंधन के लिये प्रतिरोधी प्रजातियों का चयन करें जैसे- मुक्ता केशी, जनखरी, नादिया, अधिक वर्शा वाले क्षेत्रों में अगेती बुबाई न करें, स्वच्छ, रोग रहित, कन्दों का ही प्रयोग बुबाई के लिये करें, रोग प्रभावित पौधे या पत्तियों को नष्ट करें, बीज कन्दों का उपचार 3 ग्राम रिडोमील (मैंकोजब 0.2 प्रतिशत + मेटोलोक्जिल 0.05 प्रतिशत) या 4 ग्राम ट्राइकोडरमा बिरड़ी प्रति किग्रा. कन्दों की दर से उपचारित करके बोये । रेडोमिल 3 मिली. प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोलकर 10–15 दिन पर छिड़काव करें । फसल चक्र अपनायें और गर्मी के दिनों में सफेद पॉलीथिन सीट से भूमि को दबायें ।

कीट प्रबंधन- माहू, मकड़ी, थ्रिप्स, टिट्डी, मिलीबग और सूक्ष्म रस चूसक कीटों के नियंत्रण हेतु क्विनालफास या डाइमोथिऐट (0.05 प्रतिशत) या 2 मिली. प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोलकर छिड़काव करें । बीज (कन्द) बोने या भण्डारण के पूर्व डाइमेथिऐट या क्विनालफास के 0.05 प्रतिशत या 3 मिली. प्रति लीटर पानी के घोल में 10 मिनट तक कन्दों को डुबोकर रखें फिर छाया मे सुखाकर भण्डारण करें।

भण्डारण :-कन्दों का भण्डारण शुष्क और ठंडे स्थानों पर पतली तहों में विछाकर किया जाता है । अन्य तरीकों से जैसे- बोरों में, टोकरियों में, फर्श पर, ढेर बनाकर, सरकंडे आदि में ।

उन्नतशील प्रजातियाँ :-

सतमुखी- फसल अवधि 175–190 दिन, उपज 100–150 क्विंटल/हैक्ट. ।

अरपा कोचई- कन्द पकाने पर स्वादिष्ट, उपज 150–300 क्विंटल/हैक्ट. ।

इंदिरा अरबी- सभी दशाओं के लिये उपयुक्त, उपज 330 क्विंटल/हैक्ट. ।

नरेन्द्र अरबी- अगेती किस्म औसत 120–150 उपज क्विंटल/हैक्ट. ।

व्हाइट गौरेडंया- पत्तियां भी खाने योग्य औसत उपज 170–180 क्विं./हैक्ट.।

बंगऊ काऊ- स्वादिश्ट किस्म, औसत उपज 220–400 क्विंटल/हैक्ट।

खासी बग्गा- गले में खुजली पैदा करने वाली किस्म है औसत उपज 140–160 क्विं./हैक्ट. ।

कोनी काचू- कन्द अण्डों के समान होते है । औसत उपज 120–250 क्विंटल/हैक्ट. ।

कोलबूर- 140–216 दिनों में पककर तैयार, औसत उपज 120–150 क्विंटल/हैक्ट. ।

नागा काचू- मातृ कन्द बड़े एवं छोटी कंदियकाऐं, औसत उपज 120–180 क्विंटल/हैक्ट. ।

सहर्षमुखी- अगेती किस्म, उत्पादन क्षमता 120–150 क्विंटल/हैक्ट. ।

श्री रश्मि- अधिक उपज वाली किस्म, कन्दों में अच्छी पकने की क्षमता और स्वाद होता है ।

श्री पल्लवी- कन्दों की संख्या प्रति पौधे 20–25 । उपज 15–18 टन/हैक्ट.।

अदरक की खेती

अदरक उत्पादन में टीकमगढ़ का मध्यप्रदेश में प्रथम स्थान है । जिले में अदरक की औसत उपज 12–15 क्विं. है । जबकि यदि वैज्ञानिक ढंग से खेती की जाये तो 25–30 टन/हैक्ट. उपज प्राप्त की जा सकती है । अदरक की खेती 125–150 सेमी. वर्शा वाले क्षेत्रों मे और बगीचों के नीचे भी की जा सकती है । सभी प्रकार की भूमियों में अदरक का उत्पादन किया जा सकता है । अप्रैल-जून तक, सबसे उपयुक्त समय 15 मई से 30 मई 15 जून के बाद बोने से तना सड़न अधिक लगता है । बुबाई के लिये प्रकन्द 3 से 5 सेमी. लम्बे 15–20 ग्राम वजन के 12–18 क्विं/हे. की आवश्यकता पड़ती है । समतल हल्की एवं ढालू भूमि में नालियाँ बनाकर 15 से 20 सेमी. की दूरी पर बोते है ऊँची क्यारी विधि 60–40 सेमी. दूरी पर मेड़बनाकर, 20 सेमी. की दूरी पर मेंड़ों में बुबाई की जाती है । रोपण के तुरन्त बाद 10–20 टन हरी पत्तियाँ 5–6 टन प्रति हैक्टेयर आधी मात्रा 40 दिन और 10 दिन बुबाई के बाद बिछाते हैं 100–120 किग्रा. नत्रजन, फास्फोरस एवं पोटाश 60 किग्रा. /हैक्ट. दें । 10 दिन के अंतराल पर सिंचाई करते रहे । जल जमाव न होने दे । निकाई-गुड़ाई-बुबाई से 2–3 महीने, दूसरी 4–5 माह बाद साथ ही मिट्टी भी चढ़ाये । जड़ों के पास कल्ले को काट दें । कन्द सड़न रोग के लिये 3 ग्राम रेडोमिल (मैकोजेब+मेटालिकाजिल) प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर बीज को बोने एवं भण्डारण के पहले उपचारित करें तथा खड़ी फसल में ड्रेचिंग करें । अच्छा जल निकास रखें । रोग रहित स्वस्थ्य कन्द ही बोयें । 4 ग्राम ट्राइकोडरमा + 1 किग्रा. नीम की खली प्रति क्यारी डाले । रोग ग्रस्त पौधे निकाल दें । कीटों जैसे माहू, थ्रिप्स एवं रस चूसने वाले के लिये डाईमोथिऐट 2 मिली/लीटर पानी में घोलकर 10 दिन तक छिड़काव करें । गुलाबी बीटल- पत्तियों को बीच में खाने से छेद-छेद हो जाते है । 5 ग्राम प्रति. क्विनालफॉस दानेदार 25 कि.ग्रा./हैक्ट. की दर से खेत में मिलायें । अदरक की मक्खी-मैगट कन्दों, जड़ों पर आक्रमण करते है ।

प्रमुख प्रजातियाँ-

(1) रेशा एवं उपज के आधार पर-			
प्रजाति	उपज (कु./हे.)	रेशा (प्रति.)	सूखी अदरक (प्रति.)
रियो-डी जिनेरियो	29	5.19	16.25
नाडिया	23	8.13	20.44
(2) तेल प्रतिशत एवं अवधि के अनुसार-			
प्रजाति	उपज (कु./हे.)	अवधि (दिनों में)	तेल (प्रति.)
महिमा	29	200	2.4
सुप्रभा	16	229	1.9
सुरूचि	11	218	2.0
सुरभि	17	125	2.1
रेयो डी जिनोरिया	17	190	2.3

सोयाबीन में समन्वित नाशी जीव प्रबंधन

कीट- सोयाबीन की फसल पर बीज एवं छोटे पौधे को नुकसान पहुंचाने वाला नीलाभृंग (ब्लूबीटल) पत्ते खाने वाली इल्लियां, तने को नुकसान पहुंचाने वाली तने की मक्खी एवं चक्रभृंग (गर्डल बीटल) आदि का प्रकोप होता है एवं कीटों के आक्रमण से 5 से 50 प्रतिशत तक पैदावार में कमी हो जाती है । इन कीटों के नियंत्रण के उपाय निम्नलिखित है :-

(अ) कृषिगत नियंत्रण- खेत की ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करें । मानसून की वर्षा के पूर्व बोनी नहीं करें । मानसून आगमन के पश्चात् बोनी शीघ्रता से पूरी करें । खेत नींदा रहित रखें । सोयाबीन के साथ ज्वार अथवा मक्का की अंतरवर्तीय खेती करें । खेतों को फसल अवशेशों से मुक्त रखें तथा मेढ़ों की सफाई रखें ।

(ब) रसायनिक नियंत्रण- बुआई के समय थयोमिथोक्जाम 70 डब्ल्यू.एम. 3 ग्राम दवा प्रति किलो ग्राम बीज की दर से उपचारित करने से प्रारम्भिक कीटों का नियंत्रण होता है अथवा अंकुरण के प्रारम्भ होते ही नीला भृंग कीट नियंत्रण के लिए क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत या मिथाइल पेराथियान (फालीडाल 2 प्रतिशत या थानुडाल 2 प्रतिशत) 10 किलो ग्राम प्रति एकड़ की दर से भुरकाव करना चाहिए । कई प्रकार की इल्लियां पत्ती, छोटी फलियों और फलों को खाकर नष्ट कर देती है । इन कीटों के नियंत्रण के लिए घुलनशील दवाओं की निम्नलिखित मात्रा 200 लीटर पानी में घोल कर प्रति एकड़ में छिड़काव करना चाहियें ।

हरी इल्ली की एक प्रजाति जिसका सिर पतला एवं पिछला भाग चौड़ा होता है । सोयाबीन के फूलों और फलियों को खा जाती है । जिससे पौधे फली विहीन हो जाते है । फसल बांझ होने जैसी लगती है । फूलों और फलियों को खा जाती है । चूंकि फसल पर तना, मक्खी, चक्रभृंग माहू, हरी इल्ली व तम्बाकू की इल्ली लगभग एक साथ आक्रमण करते हैं । अतः प्रथम छिड़काव 25 से 30 दिन पर एवं दूसरा छिड़काव 40–45 दिन की फसल पर आवश्यक करना चाहिए ।

क्र.	प्रयुक्त कीटनाशक	मात्रा (प्रति एकड़)	मात्रा (प्रति एकड़)	पम्पों की संख्या (प्रति एकड़)
1.	क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी.	600 मि.ली.	2 मि.ली.	20
2.	क्यूनालफॉस 25 ई.सी.	600 मि.ली.	2 मि.ली.	20
3.	ईथियान 50 ई.सी.	600 मि.ली.	2 मि.ली.	20
4.	ट्रायजोफॉस 40 ई.सी.	600 मि.ली.	2 मि.ली.	20
5.	ईथोफेनप्राक्स 10 ई.सी.	450 मि.ली.	2.0 मि.ली.	20
6.	मिथोमिल 40 एस.पी.	450 मि.ली.	1.5 मि.ली.	20

❖ **जैविक नियंत्रण -**

कीटों के आरंभिक अवस्था में जैविक कीट नियंत्रण हेतु बी.टी. एवं ब्यूबेरीया आधारित जैविक कीटनाशक 400 मि.ली. प्रति एकड़ की दर से बुबाई के 35–40 दिन तक 50–55 दिन बाद छिड़काव करें ।

- एन.पी.वी. का 100 एल.ई समतुल्य का 300 लीटर पानी प्रति एकड़ घोल बनाकर प्रति हैक्टेयर छिड़काव करें । रासायनिक कीटनाशकों की जगह जैविक कीटनाशकों को अदला-बदली कर डालना लाभदायक होता है ।
- गर्डल बीटल प्रभावित क्षेत्र में जे.एस.-335, जे.एस.- 80–21, जे.एस.- 91–41 लगावें ।
- कटाई के पश्चात् बंडलों को सीधे गहाई स्थल पर ले जावें ।
- तने की मक्खी के प्रकोप के समय छिड़काव शीघ्र करें ।
- २० 'T' टाईप खूटियां प्रति एकड़ की दर से लगाये ताकि इल्लियों को चिड़ियां खा जायेंगी ।
- फसल बोने के बाद से ही फसल निगरानी करें । यदि संभव हो तो लाइट ट्रेप तथा फेरोमेन ट्रेप का उपयोग करें

❖ कद्दू वर्गीय फसलों के लिये बरसात में मचान की व्यवस्था करें जिससे बेल मचान पर चढ़ सके । जिससे बरसात में लता (बेल) एवं फल पानी के सम्पर्क में आने से बच सकें अन्यथा वह सड़ सकते है ।

❖ अदरक में तना सड़न/गलन गम्भीर समस्या है । किसान भाई इसके बचाव के लिये गर्मी में गहरी जुताई करें तथा बुवाई के लिये तना गलन प्रतिरोधी प्रजाति जैसे सुप्रभा का चुनाव करें । बोने से पूर्व बीज को 3 ग्राम रिडोमिल/किलो बीज के हिसाब से 10 मिनट तक पानी में रखकर छाया में सुखाये फिर लगाये। यदि तना गलन बीमारी खड़ी फसल में आती है तो यही दवा पौधे के तनों के पास डालना चाहियें ।

❖ अरबी- पत्ती गलन का रोग बरसात आने पर सक्रिय हो जाता है । इसके बचाव के लिये 3 ग्राम रेडोमिल दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर 10 दिन के अंतराल पर 2–3 छिड़काव करें ।

❖ भैसों के बच्चों को कृमिनाशक दवा जैसे एलवेन्डाजोल (पेनाक्योर) अवश्य पिलाये । इससे बच्चों में 20–30 प्रतिशत मृत्यु दर कम हो जाती है तथा बच्चे भी स्वस्थ रहते हैं ।

❖ पशुओं में गलघोटू के प्रतिरोधक टीके अवश्य लगवाये क्योंकि यह बीमारी आ जाने पर इसको नियंत्रण करना कठिन हो जाता है ।

❖ फसलों में कीटनाशक का प्रयोग करते समय किसान भाई विशेष सावधानी बरतें । हवा के रूख की तरफ दवा का छिड़काव करें, दवा सुबह या शाम को छिड़के, दवा मौसम साफ होने पर छिड़के । हाथ एवं मुंह पर दस्ताने बांधकर दवा का प्रयोग करें । दवा छिड़कते समय किसी वस्तु का इस्तेमाल न करें, यदि आप किसी स्थान पर कटे हों या घाव हो तो दवा बिल्कुल न छिड़के अन्यथा आपको भारी नुकसान हो सकता है ।

❖ खरीफ फसलों की बुवाई से पहले उनके बीजों को 3 ग्राम थाइरम प्रति किलो बीज के हिसाब से अवश्य उपचारित करें । बीज उपचार करने से बीजों में होने वाली बीमारी नहीं लग पाती है ।

❖ दलहनी फसलों के बीजों को बोनों से पूर्व उनको राइजोवियम एवं पी.एस.बी. प्रति 10 ग्राम/कि.ग्रा. बीज को उपचारित करें । राइजोवियम से उपचारित करने से दलहनी फसलों में राइजोवियम बैक्टिरिया की गांठे मोटी एवं स्वस्थ्य बनेगी जिससे खेत में फसल द्वारा नाइट्रोजन का स्थिरीकरण अधिक होगा । इसी प्रकार पी.एस.बी. कल्चर डालने से जमीन के अंदर पड़ी फास्फोरस जो अघुलनशील अवस्था मे पड़ी रहती है जिसको पौधे नहीं ले पाते को घुलनशील अवस्था में बदलकर पौधों के लिये उपयोगी साबित होती है ।

❖ सभी फसलों को कतारों में बोये जिससे निदाई-गुड़ाई करने में आसानी रहती है साथ ही कतारों में बीज के नीचे उर्वरक डालने से अधिकांश उर्वरक का उपयोग फसल द्वारा किया जाता है ।

❖ बीज की संस्तुत मात्रा को ही खेत में डाले ज्यादा या कम बीज डालने से आपको फसल की भरपूर उपज नहीं मिल पायेगी । अधिक पौधे होने से फसल में उपयुक्त वायु संचार नहीं हो पाता है जिससे फसल पर फलियों की संख्या कम एवं कीट पतंगों का आक्रमण अधिक रहता है ।

❖ **तेल वाली फसलें जैसे-** तिल एवं सोयाबीन में फॉस्फोरस के साथ-साथ जिंक सल्फेट 25 कि.ग्रा./है. अवश्य प्रयोग करें इससे दाना चमकीला एवं तेल की मात्रा अधिक होने से फसल की उत्पादकता में लगभग 15–20 प्रति. की वृद्धि हो सकती है ।

❖ **उर्द/तिल-** में खरपतवार नियंत्रण के लिये बेसालीन 400 मि.ली. सक्रिय तत्व का प्रयोग प्रति एकड़ बुवाई के तुरन्त बाद करें । साथ ही इस बात का विशेष ध्यान रखें कि दवा का प्रयोग करते समय खेत में नमी की मात्रा पर्याप्त होनी चाहिये ।

❖ **खरपतवार नियंत्रण-** खरीफ फसलों में खरपतवार नियंत्रण समय से करें अन्यथा आपको 30–70 प्रति. की आर्थिक हानि उठानी पड़ सकती है । सभी फसलों में 20 दिन के अन्दर खरपतवार फसल को अधिकांशतः नुकसान पहुंचा चुके होते है ।

❖ **सोयाबीन में खरपतवार नियंत्रण-** बोनी के 15–20 दिन बाद पहली निदाई गुड़ाई करना चाहिये तथा दूसरी 40–45 दिन पश्चात् करनी चाहिये । बतर आने पर डोरा, कुलफा या व्हील हो चलाकर खरपतवार नियंत्रण करें ।

❖ **रासायनिक खरपतवार नियंत्रण-** सोयाबीन में खरपतवारों का नियंत्रण खरपतवार नाशक दवाओं का सही समय पर एवं सही मात्रा में छिड़काव करने पर प्रभावी ढंग से किया जा सकता है ।

खरपतवारनाशक	सक्रिय तत्व की मात्रा (प्रति एकड़)	खरपतवारों के प्रकार	उपयोग विधि
बोनी के पूर्व- फ्लूक्लोरीन	400 मि.ली.	सम्पूर्ण खरपतवार	1. एकड़ के लिए लगभग 400 ली पानी का उपयोग अवश्य करें । अन्यथा खरपतवारों का नियंत्रण ठीक प्रकार से नहीं हो पायेगा । 2. फ्लेटफेन का फ्लैटजैट नोजल का ही प्रयोग करें । अंकुरण के पूर्व एवं पश्चात् वाले खरपतवारनाशियों के लिये मिट्टी नमीयुक्त एवं भुर-भुर होनी चाहिये
बोनी के पश्चात् अंकुरण के पूर्व- एलाक्लोर	800 मि.ली.		
मेटालाक्लोर	400 मि.ली.		
पेन्डीमेथिलीन	400 मि.ली.		
बोनी के 15-20 दिन पश्चात् इमिजा थाइपर	30 मि.ली.	घासकुल	
क्विजालोफांस एथाइल	20 मि.ली.		

कृषि विज्ञान केन्द्र एवं आत्मा के अन्तर्गत 5000 कृषकों की उत्पादकता वृद्धि कार्यक्रम की उपलब्धियाँ

मध्य प्रदेश राज्य शासन द्वारा चलायें जा रहें उत्पादकता वृद्धि कार्यक्रम में जिले के 5000 चयन्नित कृषकों की खरीफ, रबी एवं पशुपालन में उत्पादकता बढ़ायें जाने हेतु एवं कृषकों के साथ-साथ विस्तार कार्यकर्ताओं के ज्ञान, क्षमता तथा महिलाओं में सशक्तिकरण के लिये जिले में किये गये केन्द्र-आत्मा के प्रयासों की उपलब्धियाँ उल्लेखित है :-

क्रमांक	गतिविधियाँ	क्षेत्रफल (हे.)	कृषक संख्या
1.	गहरी जुताई	464	234
2.	मृदा परीक्षण	735	735
3.	प्रदर्शन- सोयाबीन	558	1619
4.	प्रदर्शन- उर्द	2816	2841
5.	पशु चिकित्सा कैम्प	12	985
6.	कौशल उन्नयन	15	1479
7.	मोबाइल संदेश	15	4161

डा. शैलेन्द्र सिंह गौतम
प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक
(उद्यानिकी)

श्री बन्शी लाल साहू
विषय वस्तु विशेषज्ञ
(गृह विज्ञान)

डा. राकेश कुमार प्रजापति
विषय वस्तु विशेषज्ञ
(पौध संरक्षण)

डा. संदीप कुमार खरे
विषय वस्तु विशेषज्ञ
(पशु पालन)

डा. आर.के. द्विवेदी
कार्यक्रम सहायक
(सस्य विज्ञान)

श्री बृजलाल लिटौरिया
(वाहन चालक)

श्री मनोहरलाल चढ़ार
(वाहन चालक)

श्री ऐलिक हेन्री जौन
(संदेश वाहक)

प्रति, बुक-पोस्ट

.....

.....

.....

प्रेषक :-
कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़
टीकमगढ़ (म.प्र.) - 472001
दूरभाष-07683-244934

(Noble Printers-9993268032)

अपना मोबाइल नम्बर लिखवायें, घर बैठे कृषि की नई जानकारी एवं समस्याओं का समाधान पायें । सम्पर्क सूत्र- 07683-244934